Volume-6, No. 2 Aug.-2019, pp. Hin.36-40

भारत में संपोष्य/संपोषित विकास के लक्ष्यः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

श्री अनुज कुमार भड़ाना, शोधार्थी,
डॉ वीरेंद्र सिंह, शोध निर्देशक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम.एम.एच. कॉलेज गाजियाबाद, उत्तर–प्रदेश भारत।

सारांश

भारत अपनी भौगोलिक विशेषता एवं सांस्कृतिक सभ्यता संप्रदायिक विविधता के कारण विश्व पटल पर एक अलग पहचान रखता है उक्त विशिष्टता होने के बावजूद भारत में मानवीय विकास सोचनीय स्थिति में है। जिसमें गरीबी, भुखमरी, जातिवाद, संप्रदायवाद, विचारधाराओं का टकराव, लिंग भेदभाव एवं आंतरिक व बाहरी आतंकवाद आदि प्रमुख है। इन चुनौतियां के कारण प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रशासनिक उदासीनता एवं इच्छाशक्ति के अभाव एवं नागरिकों में शिक्षा की भारी कमी के साथ–साथ जागरूकता रही है। परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गांधीवादी दर्शन के आधार पर तत्कालीन सरकारों ने संवैधानिक नीति निर्देशक तत्वों के अनुसार कल्याणकारी योजनाओं एवं पंचायत राज व्यवस्था जैसे संवैधानिक प्रावधानों को क्रियान्वित किया किंतु वर्तमान में भारत विश्व के शीर्ष देशों में आर्थिक व रक्षा मामलों में शीर्ष स्थानों में होने के बावजूद भारत में गरीबी भुखमरी मौसमी बीमारियां बहुआयामी गरीबी संवेदनशील लिंग अनुपात एवं सांप्रदायिक माहौल के साथ–साथ मूलभूत आवश्यकताओं की कमी भारत की आर्थिक एवं राजनीतिक वैश्विक उन्नति पर प्रश्न चिन्ह लगा देती हैं। 1940 के दशक में प्रभाव में आया संयुक्त राष्ट्र संघ नामक संगठन ने 1980 के दशक से मानवीय विकास एवं उसके आसपास के पर्यावरण एवं परिस्थितिकी के लिए कार्यक्रम क्रियान्वित किए, जिसमें 21वीं सदी के दूसरे दशक (2015) में प्रभाव में आया संपोषित विकास कार्यक्रम। इस कार्यक्रम एशिया अफ्रीका जैसे आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक रूप से पिछड़े महाद्वीपों सहित पश्चिमी देशों में मानवीय जीवन की संभावनाओं को बेहतर करने के लिए प्रयासरत है। लेकिन आज भी भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में संपोषित विकास कार्यक्रम एक चुनौती बना हुआ है क्योंकि पूर्वी भारत आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक रूप से पिछड़ा होने के साथ–साथ प्राकृतिक दशाएं मानवीय जीवन को अनुकूल नहीं बना पा रही हैं। हालांकि नीति आयोग एवं वर्तमान केंद्रीय सरकार संपोषित विकास को लागू करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है लेकिन सामाजिक सहभागिता एवं भागीदारी के साथ–साथ प्रशासनिक समन्वय, उत्तरदायित्व एवं उदारता एक चुनौती है।

मुख्य शब्द– सम्प्रदायिक सदभाव, सामुदायिक विकास, सम्पोषित विकास, मानवीय प्लायन

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन विश्व की विकसित सभ्यताओं में से एक रही है। यहां विकसित होने वाले राजनीतिक एवं मानव की व्यक्तिगत दैनिक गतिविधियों के साथ–साथ उपासना पद्धति का विकास अलग अलग चरणों में हुआ है। जहां प्राचीन साक्ष्य रूप से भारतीय राजव्यवस्था या राष्ट्र का निर्माण मगध से हुआ वही धर्म उपासना एवं नैतिक आचरण का विकास हिमालय की निर्मल धाराओं से माना जाता है। अलग–अलग काल खंडों में रामायण महाभारत के साथ प्राचीन वैदिक ज्ञान को भी जीवन जीने की शैली का आधार बनाया गया। उक्त प्राचीन स्रोतों में मानवीय समुदाय को एक सतत संपोषित कर्म का आधार भी दिया गया जिसे वर्ण व्यवस्था या वर्ग व्यवस्था या आधुनिक जाति व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है। मगध राज्य की उत्पत्ति से लेकर सल्तनत काल के आगमन तक उत्तर दक्षिण भारत में अनेक उतार–चढ़ाव दिखाई दिए वही सल्तनत काल से मुगल काल तक और मुगल काल से उपनिवेशवाद शासन व्यवस्था तक भारतीय उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक सभ्यता एवं परिवर्तित उपासना पद्धति के अनेक चरण दिखाई देते हैं। एवम् राजनीतिक अस्थिरता के कारण भारतीय संस्कृति का मूल प्रभावित हुआ, जिससे

लोगों में गरीबी भुखमरी दरिंदगी घृणा और हिंसा अकर्मण्यता बेरोजगारी बेगारी आदि चुनौतियों ने भारतीय समाज में जन्म ले लिया। 1940 के दशक में विश्व भर से उपनिवेशवाद काल का पतन हुआ जिससे दक्षिणी अमेरिका अफ्रीका महाद्वीप और एशिया महाद्वीप के अनेक देशों को आजादी मिली। लेकिन स्वतंत्र हुए इन देशों में राजनीतिक व सामाजिक स्थिरता और समानता लाना एक चुनौतीपूर्ण मुद्दा था। उक्त विषमता एवं संघर्ष को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ नामक संस्था का उदय हुआ। जिसने नवजात स्वतंत्र राष्ट्रों को नस्ल जाति व सांप्रदायिक हिंसा से बचाने हेतु आर्थिक एवं सैनिक सुरक्षा के साथ–साथ राजनीतिक जागरूकता नागरिक सामाजिक समन्वय को बढ़ावा दिया। इसी कालखंड में भारत भी स्वतंत्र हुआ स्वतंत्र होते ही भारत में संप्रदायिक हिंसा का बड़ा मुद्दा पैदा हो गया और सदी का सबसे बड़ा मानव विस्थापन देखने को मिला। जिसकी वजह से भारतीय उपमहाद्वीप में गरीबी बेरोजगारी बेगारी एवं हिंसा का एक लंबा दौर रहा। हालांकि संप्रदायिक सद्भाव स्वच्छता शांति पूर्ण माहौल के लिए 1919 के समय से ही महात्मा गांधी जैसे अहिंसा वादी नेताओं ने 1947 तक भारतीय उपमहाद्वीप को भारतीय संस्कृति के अनुसार साधने का भरसक प्रयास किया।

स्वतंत्रता के समय से ही भारत में संपोषित विकास की आवश्यकताएं पैदा होने लगी। क्योंकि स्वतंत्रता के समय भारत की साक्षरता दर 17 परसेंट के साथ साथ बहुआयामी गरीबी से एक बड़ा वर्ग ग्रसित था। क्योंकि उपनिवेशवाद काल में भारतीय अर्थव्यवस्था की रीड की हड्डी माने जाने वाले किसान, हस्तशिल्पकार, मजदूर वर्ग, बेगारी की स्थिति में थे। हालांकि उपनिवेश काल से स्वतंत्र अभी कुछ ही समय हुआ था जिसमें भारतीय राजनेताओं ने संवैधानिक ढंग से भारत को एक कल्याणकारी पंथनिरपेक्ष समाजवादी जनता संप्रभुता राष्ट्र बनाने की दिशा में प्रभावी कदम उठाए जिसके दर्शन के लिए महात्मा गांधी का गांधीवाद डॉ.अंबेडकर का सामाजिक न्याय और प्राचीन भारतीय परंपराओं के अनुसार सबका साथ सबका विकास के सिद्धांत को आधार बनाया गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1980 के दशक में संपोषित विकास की अवधारणा को लक्षित किया गया किंतु भारत में संवैधानिक नीति निदेशक तथ्यों के आधार पर 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम 1959 में पंचायती राज व्यवस्था का उदय 1966 में हरित क्रांति के माध्यम से अनाज आपूर्ति 1971 में गरीबी हटाओ की संकल्पना और 1980 के दशक में सबके लिए आवास की अवधारणा के साथ–साथ 1990 के दशक में निजीकरण उदारीकरण वैश्वीकरण की नीति को अपनाया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1992 में पृथ्वी शिखर सम्मेलन और 21वीं शताब्दी के शुरुआत में मिलिनेयम विकास लक्ष्य (एम डी जी) प्राप्ति के माध्यम से तीसरी दुनिया अर्थात विकासशील अल्प विकसित देशों में भुखमरी गरीबी पर्यावरण सुरक्षा आदि के साथ–साथ विकसित देशों के साथ अन्य दुनिया के पारिस्थितिकी पर्यावरण की सुरक्षा के लिए मानव हितकारी कदम उठाए। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 वी शताब्दी के दूसरे दशक में (2015) में संपोषित विकास को लक्षित किया गया जिसमें 17 लक्ष्य को लक्षित किया गया है जिसमें गरीबी, भुखमरी, स्वास्थ्य, शिक्षा, लिंग, समानता, स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ आर्थिक वृद्धि, औद्योगिक/नवाचार/इंफ्रास्ट्रक्चर सतत समुदाय, उत्तरदायित्व खपत उत्पादन, पर्यावरण क्रिया, जलीय जीव, सतह के जीव, शांति न्याय सशक्त संस्थान सहभागिता आदि शामिल हैं। हालांकि भारतीय संदर्भ में महात्मा गांधी का कुटीर उद्योग/स्वच्छता/वर्ग समरसता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद/अंतोदय का सिद्धांत, समाजवादियों का सर्वोदय के साथ–साथ जेपी नारायण विनोबा भावे आदि समाजसेवियों ने स्वतंत्रता के शुरुआती चरणों में भारत की गरीब अस्वस्थ एवं भुखमरी से ग्रसित जनता के संपोषित उत्थान में अपना योगदान दिया। अर्थात संपोषित विकास कार्यक्रम लागू किया। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि संपोषित विकास के विचार भारत में महात्मा गांधी, राम मनोहर लोहिया, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विनोबा भावे जे पी नारायण पहले ही दे चुके थे।

भारत की पूर्वी भौगोलिक दशाएं प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न है किंतु आजादी के 70 वर्षों बाद यह क्षेत्र पूर्ण रूप से विकास की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाया है दूसरी पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक मॉडल के आधार पर राउरकेला, दुर्गापुर, भिलाई में औद्योगिक इकाइयों का निर्माण किया गया। किंतु प्रशासनिक अनियमितता से यहां उत्पन्न संघर्ष एवं हिंसक नक्सलवादी आंदोलन ने लगातार विकास को बाधित किया ,जिसके परिणाम स्वरुप यह क्षेत्र भारत की

आधुनिक आर्थिक शक्ति पर प्रश्नचिंह लगाता है। अर्थात यहां लोग भूख से मर रहे हैं, जिसके लिए पिछले दिनों झारखंड छत्तीसगढ़ उड़ीसा जैसे राज्यों में रोटी बैंक की अवधारणा देखी गई। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता ना होने से कैंसर मिनीमाता, रक्त कैंसर, हेपेटाइटिस, जैसे घातक रोग आम जनमानस को घेर रहे हैं।

वर्तमान केंद्र सरकार संपोषित विकास के लक्ष्यों को भारत में लागू करने के लिए नीति आयोग के साथ अनेक सतत् विकास कार्यक्रम चला रही हैं। जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं–

- सस्टेनेबल एक्शन फोर ट्रांसफॉर्मर ह्यूमन केपिटल
- स्वच्छ भारत मिशन
- डिजिटल इंडिया
- मनरेगा मुद्रा स्टार्टअप स्टैंडअप प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना रोशनी योजना आदि आर्थिक आधार योजनाएं
- उजाला योजना उज्जवला योजना एवं पेरिस समझोते आधारित स्वच्छ सोलर ऊर्जा मिशन
- कृषि में जल संरक्षण रासायनिक खाद के प्रयोग को कम करने एवं ऑर्गेनिक कृषि को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं
- आयुष्मान भारत योजना सहित अनेक गरीब एवं ग्रामीण भारतीयों के लिए स्वास्थ्य योजनाएं
- सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए विकलांगों अल्पसंख्यकों अनुसूचित जनजाति एवं अनुसूचित जाति का आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक उत्थान किया जा रहा है।
- आतंकवाद नक्सलवाद हिंसा से निपटने के लिए ग्रह मंत्रालय सहित गैर–सरकारी संगठन व स्थानीय नागरिकों के साथ समन्वय व सहयोग किया जा रहा है। जिसे पूर्वोत्तर व पूर्वी भारत में आई हिंसा में गिरावट एवं धारा 370 के समापन के बाद आतंकी गतिविधियों में गिरावट के परिणामों से देखा जा सकता है।

उक्त प्रयास से आंकलन किया जा सकता है कि भारत सरकार भारतीय समाज में संपोषित विकास के लिए प्रतिबद्ध है। लेकिन उक्त सफलताओं के बावजूद वर्तमान में संपोषित विकास को लागू करने के लिए अनेक चुनौतियों है। जैसे–

अशिक्षा अंधविश्वास एवं परंपरागत रीति रिवाज एवं सांस्कृतिक जीवन– जनगणना–2011 के अनुसार भारत में साक्षरता दर 80 फीसदी के आसपास है। परंतु साक्षरता या साक्षर होना या मानवी जीवन की दैनिक क्रियाओं के संबंध में वैज्ञानिक तकनीकी ज्ञान होना तीनों में अंतर है जबकि भारत में 50 फीसदी लोग केवल साक्षर स्थिति में है जो अपना नाम लिख सकते हैं और दैनिक अखबार की हेडलाइन पढ़ सकते हैं परंतु परंपरागत रूप से चले आ रहे अंधविश्वासों एवं रीति–रिवाजों के खिलाफ अपना मत रखना एक समझदारी भरे जीवन की पहचान है क्योंकि पूर्वी भारत में जहां भुखमरी गरीबी एवं बेरोजगारी अपने चरम स्तर पर है वहां महिलाओं पर डायन नामक परंपरागत अंधविश्वास के नाम पर हमला होता है हमला कभी–कभी इतना गंभीर होता है कि पीड़ित व्यक्ति अपनी जान गवा देता है। इसलिए नितांत आवश्यक है संपोषित विकास के लिए शिक्षा का भारतीय समाज में प्रभावी रूप से संचालन हो। अंधविश्वास के नाम पर नरबली या दूसरे अमानवीय क्रियाकलाप करते हैं जिसके चलते वे आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं एवं व्यवस्थाओं पर भरोसा नहीं करते जिसके चलते अनेक बार उन्हें इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं अतः संयुक्त राष्ट्र संघ एवं भारत सरकार के संयुक्त संपोषित लक्ष्यों में अशिक्षा बड़ी बाधा एवं चुनौती है।

आर्थिक पिछड़ापन एवं मानवीय प्लायन– भारत में व्याप्त पर्याप्त मात्रा में गरीबी बेरोजगारी बेगारी है जिसका केंद्र बिंदु बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड, पूर्वी यूपी, राजस्थान आदि प्रांतों में है। यहां से मजदूरी का एक बड़ा वर्ग दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, अहमदाबाद, सूरत आदि बड़े शहरों की तरफ विस्थापन करता है। यह विस्थापन मानवीय पलायन के रूप में कुछ वर्षों में सामने आया है क्योंकि विस्थापित हुए नागरिक बड़े मेट्रो सिटीज में अमानवीय स्थितियों में रहते हैं जैसे रेलवे लाइनों के नजदीक, नाले गंदी नदियां के आसपास बस्तियों में एवं सड़क व बड़े हाईवे के आसपास अपने आवास की स्थिति पैदा करते हैं जहां यह लोग बीमारियां हिंसा शराब नशा जैसे समस्याओं से जूझते हैं। विस्थापित हुए लोग अपने मूल स्थान पर आर्थिक जरूरतों के चलते नहीं लौट पाते जिससे मूल स्थान एवं विस्थापित प्लेस दोनों पर एक संकट की स्थिति दिखाई पड़ती है क्योंकि जहां से विस्थापन हो रहा है वहां मानव संसाधन में भारी कमी एवं जहां विस्थापन हुआ है वहां मानव संसाधन की अत्यधिक मात्रा के चलते मूलभूत सुविधाओं की

वंचना बढ़ जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्षों में यह चिंता का विषय है कि नागरिकों को अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए आर्थिक परिवेश नहीं मिल पा रहा है। संपोष्य विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में मानवीय विस्थापन प्रमुख समस्या के रूप में है।

प्रशासनिक दक्षता उत्तरदायित्व सहभागिता– प्रमुख इतिहासकार बिपिन चंद्र का मत है कि उपनिवेशवाद यदि 200 वर्षों तक शासन कर सका तो उसकी प्रमुख वजह उसकी प्रशासनिक व्यवस्था ही थी। जिसे इस्पात व्यवस्था (स्टील बॉडी) का नाम दिया गया। क्योंकि अंग्रेजो ने भारतीय संसाधनों का उपयोग करते हुए इंग्लैंड की संपन्नता को मजबूत किया। स्वतंत्र प्राप्ति के बाद यह प्रशासनिक व्यवस्था भारत में सुचारु रूप से लागू रही। जिसने अनेक उपलब्धियां प्रात की। किंतु आज भ्रष्टाचार कुशासन लालफीताशाही आदि नामकरण से भी पहचाना जाता है। प्रशासनिक उदासीनता का सबसे प्रमुख उदाहरण है कि भारत मानव विकास सूचकांक में 133 में स्थान पर, हंगर इंडेक्स में 100 वे स्थान पर, बहुआयामी गरीबी रैंकिंग में 37 वें स्थान पर है। उक्त रैंकिंग से साफ स्पष्ट होता है कि विगत 70 वर्षों भारतीय जनमानस ने मानवीय विकास के लिए कितनी सजगता और जवाबदेहिता के साथ कार्य किया है वही जेंडर गैप इंडेक्स एवं जेंडर इनिक्वालिटी में भारत क्रमशः 108 व 131 वें स्थान पर है। लिंग आधारित इंडेक्स भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि को उजागर करती है क्योंकि भारतीय समाज में लिंग आधारित भेदभाव आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में भी विद्यमान हैं जिसके परिणाम हमें आर्थिक राजनीतिक व सामाजिक तीनों स्तर पर दिखाई देते हैं जिसमें सर्वप्रथम आर्थिक स्तर पर भारत में केवल 27 परसेंट महिलाएं भारतीय आर्थिक प्रगति में अपना योगदान दे रही हैं 73 परसेंट महिलाएं कृषि कार्य एवं अवैतनिक कार्यों में संलग्न हैं। वही राजनीतिक में जहां लोकसभा में निर्वाचित महिलाओं की संख्या 11 परसेंट है और पंचायत स्तर पर महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व 33 परसेंट से लेकर 50 परसेंट तक संवैधानिक प्रवधानों के अनुसार है परंतु महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पुरुष संरक्षण में रहता है जिसमें पिता पति और पुत्र तीनों की भूमिका होती है। साथ ही सामाजिक स्तर पर महिलाओं की भागीदारी अहम है। क्योंकि महिला एक बच्चे के जन्म के बाद उसे स्तनपान के रूप में पोषण प्राप्ति से लेकर किशोर युवा अवस्थाओं में परिवार के स्तर पर पोषण युक्त भोजन की व्यवस्था परंपरागत रूप करती है। परंतु एक बड़ी संख्या में साक्षर व जागरूक ना होने के कारण महिलाएं सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक तीनों स्तरों पर भारतीय मानव समुदाय में अपना प्रमुख योगदान नहीं दे पा रहे हैं। हालांकि सरकार ने आंगनवाड़ी शिक्षामित्र सहित बुनियादी स्तर पर प्राथमिक शिक्षा एवं जागरूकता के लिए अनेक अहम पहल की हैं परंतु प्रशासनिक उदासीनता उत्तरदायित्व हीनता के चलते प्रस्तुत प्रोग्राम लक्षित लक्ष्य तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। अतः संपोषित विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महिलाओं को लक्षित करना एवं उनकी भागीदारी को बढ़ाना होगा क्योंकि महिलाएं समाज की हर दैनिक गतिविधि से जुड़ी हुई हैं।

इसरो एवं प्रौद्योगिकी पहुंच एवं नक्सल हिंसा– भारत 21वीं शताब्दी सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्व भर में अपनी तकनीकी पहचान छोड़ रहा है। जिसका परिणाम विश्व भर में भारत की सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं की मांग से आंकलित किया जा सकता है। भारत में अंतर्देशीय मिसाइल सिस्टम ,सुपर कंप्यूटर, अंतरिक्ष में रक्षा संपन्नता के साथ–साथ अंतरिक्ष संप्रेषण व स्वदेशी अंतरिक्ष पहुंच वाले इंजन का विकास प्रमुख है। इसरो एवं डीआरडीओ ने भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमा रेखा को सुरक्षित करने के लिए नाविक नामक सैटेलाइट सिस्टम का विकास किया है। जिससे आंतरिक एवं बाह्य आतंकी गतिविधियों की निगरानी निश्चित हो सकेगी। परंतु उक्त सूचना प्रौद्योगिकी की उपलब्धियां बेमानी साबित होती हैं जब पूर्वोत्तर व पूर्वी भारत सहित भारत के अनेक हिस्सों में नक्सली हिंसा, आतंकवाद के द्वारा मानव समुदाय की हानि होती है एवं गरीबी भूखमरी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं से संरक्षण ना हो पाने पर भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी की उपलब्धता पर प्रश्न चिन्ह लगता है।

अतः भारत दुनिया की दूसरी बड़ी जनसंख्या वाला देश है जिसके लिए यह बेहद आवश्यक है कि वर्तमान की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की आने वाली पीढ़ियों को प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता को निश्चित करें। जिसके लिए संपोषित विकास के लक्ष्यों को बुनियादी स्तर पर उतारना नितांत आवश्यक है। भारत में जहां नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं

एवं स्वस्थ जीवन देने के लिए चुनौतियां में संघर्ष हैं वहीं संभावनाएं भी है। जिसके लिए भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था व नागरिकों के साथ–साथ भारत सरकार, प्रांत सरकारें एवं नीति निर्माण संस्थानों को संयुक्त समन्वय परस्पर सहयोग के साथ भारतीय कृषि व्यवस्था व प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग एवं लिंग आधारित विकास के लिए महिलाओं को विशेष लक्षित प्रोग्राम व कार्यक्रमों के माध्यम को केंद्रीकृत करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यादव, राम गणेश, भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली– 20 2014।
2. गुहा, रामचंद्र , भारत नेहरू के बाद, पेंगुइन बुक्स गुरुग्राम, हरियाणा, भारत 2012।
3. अग्रवाल, पीके, इंडिया मूवमेंट टूवर्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट एमसी पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज न्यू दिल्ली भारत 1996।
4. Textbooks for sustainable development a guide tu embedding UNESCO MGIEP 2017.
5. Sustainable action for transforming human capital, NITI AAYOG, GOVERNMENT OF INDIA 2017.

पत्रिकाएं एवं रिपोर्ट

1. कुरुक्षेत्र, योजना
2. आर्थिक समीक्षा 2017–18 वित्त मंत्रालय भारत सरकार 2018
3. द हिंदू, टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक जागरण

वेबसाइट

1. www.nitiayog.gov.in
2. www.homeministry.gov.in
3. www.ecomicdevlopment.com